eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम और वैश्विक पर्यावरण सुरक्षा

[1]डॉ0 बिपिन कुमार शुक्ल

[1]एसो0प्रो0–राजनीति विज्ञान फ0अ0अ0 राजकीय स्ना0 महाविद्यालय, महमूदाबाद (सीतापुर) उ0प्र0

Received: 13 July 2020, Accepted: 27 July 2020, Published on line: 30 Sep 2020

Abstract

पर्यावरण संकट वर्तमान दौर की एक गंभीर समस्या है। यह एक ऐसी वैश्विक समस्या है जिसे राज्य की सीमाओं में नहीं बांधा जा सकता। हमारा संपूर्ण वैश्विक जीवमंडल एक इकाई के रूप में कार्य करता है और किसी क्षेत्र विशेष में होने वाले पर्यावरणीय परिवर्तन संपूर्ण वैश्विक जीवमंडल को प्रभावित करते हैं। यही कारण है कि इसके निवारण के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर साझा प्रयास किए जा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम एक ऐसा ही साझा मंच है जहां संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में इस समस्या को सीमित करने एवं उसके हल खोजने के प्रयास किया जा रहे हैं। प्रस्तुत अध्ययन में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की वैश्विक स्तर पर पर्यावरण संरक्षण में भूमिका का मूल्यांकन करते हुए उसे और बेहतर बनाने हेतु आवश्यक सुझाव उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है।

शब्द पूंजीः– पर्यावरण संकट, गरीबी और सतत विकास, पर्यावरणीय शासन, आपदाएं और संघर्ष, पारिस्थितिकी प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन, संसाधनों का कुशल उपभोग, गुणात्मक जीवन स्तर आदि।

Introduction

प्राकृतिक एवं मानवीय गतिविधियांआज हमारे चारों ओर विद्यमान पर्यावरण को निरंतर प्रभावित कर रही हैं। अवश्यंभावी प्रकृति वाले इन प्रभावों में से कुछ मानव जीवन को बेहतर बनाने का काम कर रहे हैं वहीं कतिपय अन्य प्रभावों का नकारात्मक असर हमारी चिंता का विषय बना हुआ है। फलस्वरूप परिवर्तन (विकास) और पर्यावरण के मध्य सहसंबंध एक बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। आज राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों पटलों पर पर्यावरण और विकास के मध्य सामंजस्य स्थापित करने के अनेक प्रयास किए जारी हैं। अंतर्राष्ट्रीय मौसम विज्ञान संगठन(1873) तथा अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान परिषद (1919) को वैश्विक पर्यावरण प्रबंधन के आरंभिक अंतर्राष्ट्रीय संस्थागत प्रयासों के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

पर्यावरण संबंधित समस्या को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मूल रूप से विगत शताब्दी के उत्तरार्ध में रेखांकित किया गया, क्योंकि प्रारंभिक दौर में अल्प विकसित एवं विकासशील देशों द्वारा अपनी कमजोर आर्थिक स्थिति के चलते पर्यावरण की समस्या को प्राथमिकता प्रदान नहीं की गई। इस प्रकार पर्यावरण संरक्षण की दिशा में प्रयास मुख्य रूप से द्वितीय विश्व युद्ध उत्तर काल में ही प्रारंभ हुए।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रमः

1945 में अस्तित्व में आए संयुक्त राष्ट्र का मूल उद्देश्य आने वाली पीढ़ियों को युद्ध की विभीषिका से बचाने के साथ– साथ सामाजिक ,सांस्कृतिक और मानवीय प्रकृति की अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के लिए सहयोग प्राप्त करना है। इस दिशा में संयुक्त राष्ट्र के तत्वावधान में विभिन्न व्यवस्थाओं का सृजन हुआ जिनका संबंध पर्यावरण से था। उदाहरण के लिए 'खाद्य एवं कृषि संगठन'की गतिविधियों के अंतर्गत वानिकी विषय को अनिवार्य रूप से जोड़ा गया। 'विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय वित्त'के साथ–साथ संयुक्त राष्ट्र सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिषद(यूनेस्को) के तत्वाधान में पर्यावरण संबंधी विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन किया गया।

लेकिन पर्यावरणीय समस्या और उससे जुड़े मुद्दों को लेकर सर्वप्रथम मुख्य पहल 1972 में स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में आयोजित 'संयुक्त राष्ट्र मानवीय पर्यावरण सम्मेलन' के रूप में की गई जहां औद्योगिक समाज से जुड़े हुए देशों ने औद्योगीकरण के फलस्वरुप हो रहे पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित एवं नियमित करने के अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों की पहल की । इसके अतिरिक्त समुद्री जैविक संसाधनों की सुरक्षा, पर्यावरण परिवर्तन एवं जैविक परिवर्तन से संबंधित आपदाओं पर विस्तार में चर्चा की गई ।इस सम्मेलन के माध्यम से एक पर्यावरण प्रबंधन निकाय की स्थापना की गई जिसे 'संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम' की संज्ञा दी गई । उल्लेखनीय है कि संयुक्त राष्ट्र के ज्यादातर कार्यालय विकसित देशों में स्थापित हैं, उनसे ठीक विपरीत संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम का मुख्यालय नैरोबी में स्थापित किया गया ।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा कार्यक्रम के उद्देश्यः

संयुक्त राष्ट्र से कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन के क्षेत्र में लोगों और राष्ट्रों को प्रेरित, संसूचित तथा सक्षम बनाते हुए नेतृत्व प्रदान करना एवं उनके मध्य सहयोग को बढ़ावा देना है ताकि आगामी पीढ़ियों की आवश्यकता से कोई समझौता किए बिना उनके जीवन स्तर को बेहतर बनाया जा सके।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण प्रशासन के क्षेत्र में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं–

1– पर्यावरण के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को प्रोत्साहन देना।

2– संयुक्त राष्ट्र के अंतर्गत पर्यावरण संबंधी कार्यक्रमों के निर्देशन एवं समन्वय हेतु सामान्य नीतिगत मार्ग निर्देशन करना।

3– संयुक्त राष्ट्र के तत्वाधान में पर्यावरण संबंधी कार्यक्रम के क्रियान्वयन का मूल्यांकन।

4– वैश्विक पर्यावरण परिस्थितियों का निरंतर मूल्यांकन।

5– पर्यावरण के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिकों एवं अन्य सहयोगी समुदायों के योगदान को प्रोत्साहित करना।

6– संयुक्त राष्ट्र के तत्वाधान में पर्यावरण कार्यक्रम के नीतिगत निर्माण एवं क्रियान्वयन हेतु आवश्यक तकनीकी ज्ञान एवं सूचना का आदान प्रदान आदि।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम का संगठनात्मक ढांचा–

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम मुख्य रूप से चार उप –संरचनात्मक ढांचों के माध्यम से काम करता है–

1–शासी परिषद अथवा संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभाः

58 सदस्यों वाली इस परिषद का निर्माण संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा क्षेत्रीय आधार पर 3 वर्षों के लिए चुने गए सदस्यों के द्वारा होता था।इस परिषद का सम्मेलन वर्ष में एक बार आयोजित किया जाता था तथा यह परिषद संयुक्त राष्ट्र की आर्थिक–सामाजिक परिषद के माध्यम से संयुक्त राष्ट्र महासभा को अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत करती थी। 2012 में सतत् विकास पर पर्यावरण सम्मेलन के दौरान इस परिषद के स्थान पर संयुक्त राष्ट्र महासभा ने संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा का गठन किया ।193 सदस्यों वाली इस सभा की बैठक प्रत्येक 2 वर्ष में एक बार आयोजित की जाती है। वर्तमान में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण सभा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण नीतियों के लिए प्राथमिकताएं निर्धारित करने और अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण कानून विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रही है।

2– स्थाई प्रतिनिधि समितिः

यह समिति शासी परिषद की सहयोगी समिति होती है जिसमें संयुक्त राष्ट्र के सभी सदस्य राष्ट्रों के साथ साथ उसकी विशेष एजेंसियों तथा यूरोपीय समुदाय के सदस्य शामिल होते हैं।इस समिति का सम्मेलन वर्ष में चार बार आयोजित किया जाता है। इस समिति को यह अधिकार प्रदान किया गया है कि पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर वह उप समितियों, कार्यकारी दलों तथा सहयोगी संगठनों का विशेष उद्देश्य के लिए निर्माण कर सकती है जिनके माध्यम से वह शासी परिषद के प्रशासनिक ,वित्तीय एवं कार्यक्रम संबंधी मामलों के क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन कर सके।

3– सचिवालयः

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम का सचिवालय नैरोबी में अवस्थित है। संयुक्त राष्ट्र का यह सचिवालय विकासशील देशों में स्थापित होने वाला प्रथम सचिवालय है। नैरोबी अवस्थित यह सचिवालय संयुक्त संयुक्त राष्ट्र के तत्वाधान में संपन्न होने वाले विभिन्न पर्यावरण कार्यक्रमों के समन्वय का केंद्र बिंदु है इसका प्रमुख अधिकारी एक कार्यकारी निदेशक होता है। 1972 में सर्वप्रथम कनाडा के राजनीतिज्ञ मॉरिस स्ट्रांग को संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम का कार्यकारी निदेशक बनाया गया। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम नैरोबी स्थित अपने कार्यालय के अतिरिक्त विभिन्न क्षेत्रीय कार्यालयों के माध्यम से अपने उद्देश्य एवं कार्यों का निष्पादन करता है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के भौगोलिक आधार पर विभिन्न क्षेत्रों में कार्यालय स्थापित किए गए हैं यथा– अफ्रीका ,एशिया और पेसिफिक, यूरोप ,कैरेबियाई देश और लैटिन अमेरिका तथा पश्चिम एशिया आदि।

4–वित्त व्यवस्थाः

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम का वित्तीयन मुख्य रूप से सदस्य राष्ट्रों द्वारा किए जाने वाले स्वैच्छिक अनुदान पर निर्भर करता है। राष्ट्रों द्वारा किए जाने वाले इस अनुदान के संदर्भ में कोई निश्चित व्यवस्था संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम में नहीं की गई है। सदस्य राष्ट्रों के स्वैच्छिक सहयोग से स्थापित इस पर्यावरण कोष को संयुक्त राष्ट्र के नियमित बजट से भी एक छोटा अंश प्राप्त होता

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

है। इसके साथ –साथ विभिन्न गैर–सरकारी संगठनों के द्वारा भी इस कोष को आर्थिक सहयोग प्रदान किया जाता है।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के संरचनात्मक स्वरूप में प्रमुख निम्न प्रभाग शामिल हैं –

त्वरित चेतावनी एवं आंकलन प्रभाग, पर्यावरण की नीति क्रियान्वयन प्रभाग, तकनीकी उद्योग एवं अर्थशास्त्र प्रभाग, पर्यावरण कानून एवं सम्मेलन प्रभाग, वैश्विक पर्यावरण सुविधा सहयोग प्रभाग, संचार एवं जन सूचना प्रभाग।

वैश्विक पर्यावरण संरक्षण और संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रमः

अपने स्थापना वर्ष से ही संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम अंतरराष्ट्रीय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण के क्षेत्र में प्रभावी भूमिका निभाता रहा है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम अपने एक विशेष कार्यक्रम 'अर्थ वाच' की मदद से वैश्विक पर्यावरण पर निगरानी, पर्यावरण की प्रवृत्तियों का विश्लेषण एवं पर्यावरण संबंधी जानकारी एकत्र करने के साथ–साथ विकासशील देशों में उनकी आवश्यकता एवं प्राथमिकताओं के अनुसार पर्यावरण सुरक्षा परियोजनाओं का क्रियान्वयन सुनिश्चित करती है। इसके अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम संयुक्त राष्ट्र की विभिन्न एजेंसियों तथा अन्य गैर–सरकारी संस्थाओं की पर्यावरणीय गतिविधियों में समन्वय स्थापित करता है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा किए गए योगदान को निम्नवत प्रस्तुत किया जा सकता है–

1– क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संबंधी कानून निर्माण कर्ता निकाय के रूप मेंः

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संबंधी कानून बनाने वाला प्राथमिक निकाय है। इस निकाय द्वारा बनाए गए प्रमुख पर्यावरण कानून इस प्रकार हैं– ओजोन परत के क्षरण के लिए जिम्मेदार क्लोरो फ्लोरो कार्बन गैसों के उत्सर्जन पर नियंत्रण एवं ओजोन परत के संरक्षण पर मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल (1987), विषाक्त अपशिष्ट पदार्थों के अंतर्देशीय स्थानांतरण पर नियंत्रण और इन पदार्थों के निपटारे पर बेसल कन्वेंशन(1989), जलवायु परिवर्तन एवं जैव विविधता के संरक्षण पर रियो डी जेनेरियो सम्मेलन (1992) – इस सम्मेलन में यह निर्णय लिया गया कि प्रत्येक वर्ष में जलवायु परिवर्तन की चिंताओं पर चर्चा एवं उस पर कार योजना बनाने हेतु सदस्य राष्ट्रों का एक सम्मेलन आयोजित किया जाएगा जिसे 'कॉन्फ्रेंस ऑफ पार्टीज'(COP) की संज्ञा दी गई ।2018 तक 23 कॉन्फ्रेंस आफ पार्टीज संपन्न हो चुके हैं।

2– पर्यावरण संबंधी नीति निर्धारण हेतु राष्ट्रों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करने मेंः

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम एक ऐसे निकाय के रूप में स्वयं को स्थापित करने में सफल रहा है जो सदस्य राष्ट्रों को पर्यावरण संबंधी नीतियों के निर्धारण में महत्वपूर्ण वैज्ञानिक एवं तकनीकी सहायता प्रदान करता रहा है। इस संदर्भ में 'दि जियो–2000 ' की चर्चा उल्लेखनीय है जो विश्व पर्यावरण के मूल्यांकन की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक दस्तावेज है ।इस दस्तावेज में विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में विद्यमान पर्यावरण चुनौतियों की पहचान करते हुए प्राथमिकता के आधार पर उनके समाधान हेतु प्रयासों को सुझाया गया है। इस दृष्टि से यह दस्तावेज एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक धरोहर हैं जो राष्ट्रों को नीति निर्धारण में मदद कर रहा है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

3–संयुक्त राष्ट्र व्यवस्था के अंतर्गत विभिन्न संगठनों के मध्य पर्यावरण संबंधी मुद्दों के समन्वयक के रूपः

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की एक अन्य महत्वपूर्ण भूमिका संयुक्त राष्ट्र के तत्वाधान में विभिन्न उप संगठनों और संस्थानों द्वारा पर्यावरण के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों के मध्य समन्वय स्थापित करना है। उल्लेखनीय है कि संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र के तत्वाधान में विभिन्न अन्य उप संगठन (यूनेस्को, संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम, संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन एवं विश्व स्वास्थ संगठन आदि) और समितियों द्वारा पर्यावरण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किए जा रहे हैं । संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम इन संगठनों एवं समितियों के द्वारा संपादित किए जाने वाले कार्यों के मध्य समन्वय स्थापित करने के साथ–साथ पर्यावरण के क्षेत्र में काम करने वाले अन्य विभिन्न गैर–सरकारी संगठनों के साथ समन्वय स्थापित कर पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

4– सदस्य राष्ट्रों के मध्य पर्यावरण संबंधी बहुपक्षीय समझौतों के निर्धारक के रूप में:

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न राष्ट्रों के मध्य पर्यावरण परिवर्तन ,संरक्षण एवं संवर्धन के संदर्भ में बहुपक्षीय समझौते एवं नीतियों के निर्धारक की है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम वैश्विक स्तर पर पर्यावरण के संदर्भ में जागरूकता फैलाने वाला सर्वाधिक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय निकाय रहा है।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की सीमाएं :

इस तथ्य के बावजूद कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण के क्षेत्र में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की उपलब्धियां अत्यंत महत्वपूर्ण रही हैं ; विभिन्न विद्वानों, सरकारी एवं गैर–सरकारी संगठनों तथा अन्य वैचारिक स्तरों पर संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम में सुधार की मांग लगातार उठाई जाती रही है। इस मांग के पीछे जो प्रमुख कारण चिन्हित किए जाते हैं वह इस प्रकार हैं–

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संपन्न हो रहे बहुपक्षीय पर्यावरण समझौतों के मध्य समन्वय का पूर्ण अभाव :

कहने का आशय यह है कि संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र के तत्वाधान में विभिन्न संगठनों एवं समितियों एवं अन्य विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर बहुतायत में किए जा रहे बहुपक्षीय पर्यावरण समझौते में पुनरावृति, अतिछादन (ओवरलैपिंग) एवं अपूर्णता विद्यमान है जिसके परिणाम स्वरूप अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संबंधी नीतियों के निर्धारण में प्रायः बाधाएं उत्पन्न होती हैं।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम एवं संयुक्त राष्ट्र व्यवस्था की अन्य संस्थाओं को प्राप्त प्राधिकार का अतिछादित (ओवर लैप) होना–

पर्यावरण परिवर्तन, संरक्षण एवं संवर्धन के क्षेत्र में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम को प्राप्त प्राधिकार एवं दायित्व निर्वाध प्रकृति के नहीं हैं वरन इसी तरह के प्राधिकार और दायित्व संयुक्त राष्ट्र व्यवस्था की अन्य संस्थाओं को भी प्रदान किए गए हैं । परिणामस्वरूप संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम और अन्य संस्थाओं द्वारा पर्यावरण परिवर्तन , संरक्षण एवं संवर्धन के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों में एक दोहराव एवं अतिछादन के साथ–साथ अस्पष्टता जन्म लेती है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

उदाहरण के लिए पर्यावरण और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन(UNCED) द्वारा स्थापित सतत विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन तथा जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन आदि द्वारा भी अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में पर्यावरण परिवर्तन, संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु कार्य किये जा रहे है।

अस्थाई एवं कमजोर वित्तीय व्यवस्थाः

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की एक अन्य प्रमुख कमजोरी उसकी वित्तीय व्यवस्था है ।पर्यावरण कोष हेतु सदस्य राष्ट्रों एवं गैर सरकारी संगठनों द्वारा किए जाने वाले स्वैच्छिक अनुदान के अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र के सामान्य बजट से एक छोटा सा अंश (पर्यावरण कार्यक्रम के कुल बजट का 5%)ही प्रदान किया जाता है जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा संपादित किए जाने वाले कार्यों के लिए कदाचित पर्याप्त नही होता है। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रों द्वारा किया जाने वाला ऐच्छिक अनुदान ,जो पर्यावरण कोष का लगभग 95% होता है, अस्थाई प्रकृति का है। सदस्य राष्ट्र अपनी इच्छा अनुसार ही इसमें प्रतिभाग करते हैं ।1998 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के लिए अनुदान देने वाले देशों की संख्या 73 थी जबकि 2000 में केवल 56 राष्ट्र ने संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के लिए वित्तीय योगदान दिया। 2002 में सदस्य राष्ट्रों द्वारा स्वैच्छिक योगदान के एक मानदंड का निर्धारण किया गया जिसके अनुसार 27 राष्ट्रों ने संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम को एक निश्चित अंश के रूप में योगदान करने का निर्णय लिया । यद्यपि यह निर्णय स्वागत योग्य था परंतु संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम में योगदान करने वाले राष्ट्रों की संख्या हमेशा कुल सदस्य संख्या के आधे के ही आसपास ही बनी रही।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम में सुधार और संभावनाएंः

उपर्युक्त तथ्यों के मद्देनजर संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम में लगातार परिवर्तन और सुधार की मांग विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर की जाती रही है । स्वयं 1997 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की शासी परिषद में इस बात पर बल दिया गया कि ''संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम, पर्यावरण के क्षेत्र में संयुक्त राष्ट्र का मुख्य अंग है और बना भी रहना चाहिए एवं इसके अनुरूप ही उसके प्राधिकार और भूमिकाएं निर्धारित की जानी चाहिए।'' पुनः 2009 में शासी परिषद ने संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम में सुधार हेतु एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधि मंडल का गठन किया।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम और अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण सुरक्षा हेतु समय–समय पर विभिन्न मंचों पर जो सुधार प्रस्ताव सुझाए गए उन्हें सार रूप में हम दो वर्ग में विभक्त कर सकते हैं–प्रथम बृहद स्तरीय सुधार एवं द्वितीय उत्तरोत्तर सुधार। वृहद स्तर पर इस बात के प्रयास किए जाने चाहिए कि एक अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण संगठन रूपी वैश्विक संगठन का निर्माण किया जहां पर्यावरण संबंधित समस्त बहुपक्षीय समझौतों को एक साझा मंच मिल सके। उत्तरोत्तर सुधारों के अंतर्गत हमें वर्तमान संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम में कुछ परिवर्तनों को शामिल करना होगा जो अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण सुरक्षा को और सुदृढ़ कर सकें। यथा–

- संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की निगरानी ,मूल्यांकन और सूचना प्रणाली को मजबूत करना ताकि वैश्विक एवं क्षेत्रीय स्तर पर और है विभिन्न बहुपक्षीय पर्यावरण समझौतों के तालमेल स्थापित किया जा सके।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

- वैश्विक पर्यावरण सुरक्षा के लिए कार्य कर रहे विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों और संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के प्रतिनिधि मंडल के मध्य निरंतर संवाद तंत्र विकसित किया जाना चाहिए ताकि इस क्षेत्र में बेहतर उपलब्धियों को हासिल किया जा सके।
- इसके साथ ही साथ संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की वित्तीय व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ करना होगा। इसके लिए संयुक्त राष्ट्र के समस्त सदस्य राष्ट्रों द्वारा पर्यावरण कोष में एक निश्चित अनुपात में वित्तीय अनुदान दिए जाने का प्रबंध किया जा सकता है जिसमें विकसित देश राष्ट्रों को आगे आकर बेहतर अनुपात में भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी।
- इसके अतिरिक्त ,संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम और अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण सुरक्षा को और बेहतर बनाने के लिए नागरिक समाज को इस कार्यक्रम से जोड़ना अनिवार्य होगा क्योंकि नागरिक समाज जनमानस में पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं तत्संबंधी मूल्यों उत्पन्न करने में महती भूमिका निभाते हुए नीति निर्माताओं को पर्यावरण के संदर्भ में बेहतर नीतियां बनाने हेतु मजबूर कर सकता है।

संदर्भ सूचीः

1– मुस्तफा के तोलवा और ओसामा ए एलीचोली : दि वर्ल्ड एनवायरनमेंट1972–1992, टू डिकेड्स ऑफ चैलेंज
2– एनवायरमेंटल गवर्नेंसः यूएनईपी पब्लिकेशन 2009
3– केपी सक्सेना : रिफॉर्मिंग दी यूनाइटेड नेशंस, नई दिल्ली 1993
4– पोलर एंड ब्राउनः ग्लोबल एनवायरमेंट पॉलिटिक्स, वेस्ट व्यू प्रेस ,यूएसए 1996
5– रमेश जी एंड डी.बी. रावः यूएन एंड एनवायरमेंट, न्यू दिल्ली ,1998
6– इंटरनेशनल एनवायरमेंटल गवर्नेंस, यून पब्लिकेशन 2009
7– रिचर्ड जी तारासोस्की : इंटरनेशनल एनवायरमेंटल गवर्नेंस, स्ट्रैंथनिंग यूएन ईपी 2002